IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 5.731

Volume 6, Issue 5, May 2026

वैदिक संस्कृति में वृक्ष–पूजा : एक अध्ययन

डॉ. प्रदीप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर (उ0प्र0)

वैदिक वाङ्मय में वृक्षों की उपादेयता को महिमागंडित किया गया है। ऋग्वेद में वृक्षों को वनस्पति (वनों के अधिपति) कहा गया है। वनस्पतियों को देवता के रूप में ख्याति प्राप्ति करके एक मंत्र में यह कामना की है– ''पर्वत हमारे धन की रक्षा करें, हमारी सहायता औषधियां, अन्तरिक्ष, भूमण्डल, पेड़–पौधे एवं जल हमारे पालक हो।''[1] इस तरह से अन्य स्थलों पर पर्वतों, वनस्पतियों, नदियों, इक्कीस नदियों, बाण चलाने वालों, नक्षत्रों, रूद्र, अग्नि आदि देवताओं की यज्ञ में स्तुति किये जाने का उल्लेख है।[2] इन स्थलों पर वृक्षों को देवता की कोटि में गौरवशाली माना गया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल में सम्पूर्ण 146 सूक्त 'अरण्यानी' नाम से सम्पूर्ण वन को एक देवी मानकर श्रद्धा में समर्पित है। इसे आकर्षित खाद्य सामग्री से परिपूर्ण एवं पशुओं की माता कहा गया है।[3] इसके बारे में रात की ध्वनिहीनता में वन में सुनाई पड़ने वाली कई प्रकार की ध्वनियों का आश्चर्यजनक रूप में वर्णन किया गया है। विशाल अरण्यानी की वन्दना करते हुए बताया गया है। प्रारम्भिक समय में उस स्थान पर कृषि की कमी थी, हिरनों को विश्राम मिलता था, इसलिए विशाल अरण्यानी वन्दना के योग्य है।[4] इस सूक्त में कहा गया है कि इष्ट देवी जंगल की देवी अन्तर्धान हो जाती थी। पशु–पक्षियों के कलरव उसकी कीर्तिमान माना जाता था।[5] इस तरह से वन देवी की पूजा का वर्णन ऋग्वेद से प्राप्त होता है। वैदिक संस्कृति में वृक्षों एवं वनस्पतियों से प्राप्त औषधियों को अद्भुत माना जाता था। ऋग्वेद के 10वें मण्डल में 97वां सूक्त में औषधियों की वन्दना में समर्पित है। औषधियों की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए एक मंत्र में उनसे इस प्रकार निवेदन किया गया है कि– ''हे पुष्प फलों से सम्पन्न औषधियों। तुम मरीज पर परोपकार करो। रण क्षेत्र में जैसे अश्व विजय प्राप्त करते हुए प्रगतिशील होते है। उसी प्रकार रोग पर तुम विजय प्राप्त करती रहो। इन पुरूषों को रोग से मुक्त करो।[6] ऋग्वेद में पीपल और पलाश के वृक्ष में दवाईयों का अधिवास होता है।[7] इसके अनुसार कह सकते है कि जीवन रक्षक दवाईयों के प्रदाता के रूप में पीपल तथा पलाश का पेड़ आराध्य बन गये। अथर्ववेद में उल्लेख है कि दवाईयों के रूप में प्रयोग होने वाली किसी भी जड़ी को 'माता पृथ्वी पर उपजी देवी' कहना चाहिए।[8] इस तरह से कहा जा सकता है कि साधन स्थान वृक्ष के प्राण रक्षक होने के कारण आस्था के पात्र बन गये एवं इसलिए उनकी गिनती देवताओं की श्रेणी में की जाने लगी। इस प्रकार वृक्ष लोक–देवताओं के रूप में सुप्रसिद्ध हो गये। अथर्ववेद में बताया गया है कि देवताओं की सूची में वनस्पति, औषधि, सोम वृक्ष देवताओं के सदस्य है। रूद्र देवता को इस समूह में मानना चाहिए जिससे यजुर्वेद[9] एवं वाजसनेयी संहिता[10] में रूद्र को 'वनाना पति' कहा गया है, जिसका अर्थ है कि वनों के पति अथवा वनस्पति या वनस्पति। यजुर्वेद में रूद्र देवता को वृक्षों और औषधियों का राजा कहा गया है।[11] वैदिक संस्कृति में घर लड़की से निर्मित होते थे, इस तरह लकड़ी के प्राप्ति स्थान होने के कारण वैदिक संस्कृति में वृक्षों का अधिक महत्व एवं उपयोगिता थी। संसार का सृजन का मुख्य अवयव लकड़ी को मानते हुए ऋग्वेद[12] का ऋषि प्रश्न करता है कि वह कौन सी लकड़ी थी? कौन सा वृक्ष था? जिसके तत्व से इन लोगों ने (इन्द्र, महद्गणों) पृथ्वी एवं आकाश को निर्मित किया। एक अन्य स्थान पर ऋग्वेद[13] को ऋषि प्रश्न करता है कि किस वन के वृक्ष से विश्वकर्मा देव ने

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

पृथ्वी की रचना की? हे मेधावीवन! यह जानने की इच्छा करो कि विश्वकर्मा देवता ने किस पदार्थ पर स्थित होकर संसार को स्थिर किया? इन गूढ़ प्रश्न का उत्तर तैत्तरीय ब्राह्मण में मिलता है जहां कहा गया है कि ब्रह्मा ही वह लकड़ी एवं वृक्ष था।[14] इस अज्ञात प्रश्नोत्तर एवं वृक्ष को ब्रह्मा का नाम प्रदान किये जाने से प्रदीप्त है कि इस काल में वृक्षों को प्रत्यक्ष देवता माना जाता था। शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति को वनस्पति कहा गया है। इस उल्लेख से वर्णित तथ्य की पुष्टि होती है।[15] रचना उत्पत्ति संबंधी वैदिक उल्लेखों में वृक्षों का धार्मिक महत्व स्थापित है। ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि एक वृक्ष पर दो पक्षी निवास करते है, इनमें एक तो मीठे तथा स्वादिष्ट फलों का खादन करता है। लेकिन दूसरा कुछ नहीं खाता है। वह केवल अवलोकन करता है।[16] निश्चय ही यहां पर दैवी फल की चर्चा की गयी है, क्योंकि मंत्र में प्रयोग पीपल को मुण्डक उपनिषद[17] एवं श्वेताश्वर उपनिषद[18] में स्वर्गीय फल कहा गया है। वृक्ष को जगत का प्रतिनिधि संदर्भित मंत्र में स्वीकार किया गया है तथा दो पक्षी क्रमशः जीव एवं ब्रह्म प्रतीत होते है। विद्वान इसकी चाहे जो भी व्याख्या करें, मूलतः यह आवास और आश्रय के मुख्य स्थलों की वृक्षों की महिमा को प्रकट करता है।

देवताओं के निवास–स्थल वृक्ष–

वैदिक संस्कृति में वृक्षों को देवता के निवास स्थान के रूप में ख्याति प्राप्त थी। ऋग्वेद में एक स्थान पर दार्शनिक शैली में कहा गया है कि जिस वृक्ष पर सुपर्ण मधुर रस की कामना हेतु निवास करते है एवं प्रजा की उत्पत्ति में लीन रहते है, उनके अग्रभाग में मधुर रस तथा मीठे फल बनाते हैं। वह व्यक्ति जो अपने पिता को नहीं जानता, वह इस फल को नहीं प्राप्त कर सकता है।[20] वर्णन किया गया है कि ऋग्वेद में सुपर्ण को असीम गति वाला कहा गया है जो अंतरिक्ष में नित्य ही रहता है एवं पूरे संसार या सम्पूर्ण भूतों को कृपा दृष्टि से देखता है।[21] ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में सुपर्ण का अर्थ 'सविता' कथित है।[22] के0एन0 शास्त्री के अनुसार ऋग्वेद में सूर्य देवता को सुपर्ण गुरूत्मान या सुन्दर पक्षों वाला पक्षी कहा गया है।[23] इसके आधार पर उपर्युक्त मंत्र में प्रयोग किया गया सपर्ण शब्द को देवता का सूचक माना जा सकता है।[24] इससे पता चलता है कि वृक्ष के देवताओं का निवास स्थान मालूम पड़ते हैं। ऋग्वेद में एक स्थान पर सुन्दर पत्रों से अलंकृत वृक्ष पर बैठकर यमराज के सोमरस का पान करने का वर्णन प्राप्त है।[25] इस मंत्र से यह स्पष्ट होता है कि उस वृक्ष पर बैठने वाला व्यक्ति अपने पितरों का सहायक होता है एवं उसके पिता की आकांक्षा की पूर्ति होती है।[26] तृतीय देवलोक में देवताओं के निवास स्थान में एक पीपल का वृक्ष है, जिसके अमृत से कुष्ट रोग दूर हो जाता है, इसका वर्णन 'अथर्ववेद' में किया गया है।[27] अथर्ववेद के इस उल्लेख से ऋग्वेद के उस विवरण का प्रमाण मिलता है, जिसमें दवाईयों की प्राप्ति स्थल पीपल एवं पलाश के वृक्ष है।[28] तृतीय स्वर्ग में देवतागण पीपल के वृक्ष में निवास करते थे, जिसका वर्णन कौषितकी उपनिषद में मिलता है।[29] वैदिक कालीन संस्कृति में वृक्षों पर निवास करने वाले देवता में प्रमुख अश्वनी कुमार का वर्णन प्राप्त है।[30]

गंधर्वों एवं अप्सराओं के निवास–स्थल वृक्ष–

देवताओं के अलावा वृक्षों को गंधर्वो और अप्सराओं का निवास स्थान माना जाता था। अथर्ववेद में अप्सराओं को बरगद एवं पीपल वृक्षों पर रहने वाला माना जाता है, जहां पर इनकी वंशी एवं बल्लियों की ध्वनि गूंजती रहती है।[31] तैत्तरीय संहिता में पीपल, न्यग्रोध, उदुम्बर एवं प्लक्ष के वृक्षों की लकड़ियों को हवन के रूप में प्रयोग किये जाने का वर्णन प्राप्त है।[32] वृक्षों पर रहने वाले गंधर्वो और अप्सराओं से प्रस्थान करते हुए वैवाहिक जलूस पर अनुग्रह करने की प्रार्थना की गयी है। वृक्षों में प्रेतात्माओं के भी निवास–स्थल माने जाते थे।[33]

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

अग्नि का उत्पत्ति– स्थल वृक्ष–

वैदिक कालीन संस्कृति में अग्नि की गणना सबसे अधिक देवताओं में की जाती थी।[34] इस दृष्टि से वृक्षों का महत्ता विशिष्ट है। ऋग्वेद में अग्नि को अरणियों से उत्पन्न बताया गया है कि भरतों ने इस परमेश्वर अग्निदेव को अरणि–मंथन द्वारा उत्पन्न किया है। हे अग्नि देवता! अनेक धन तुम हम पर कृपा करो और हमें सदा अन्य प्रदान करो।[35] अन्य स्थान पर ऋग्वेद में कहा गया है कि जगत की रक्षा करने में पूर्ण रूप से शक्तिशाली अग्निदेव अरणि–मंथन से उत्पन्न होते है।[36] ऋग्वेद के अन्य मंत्र में उल्लेख है कि अरणियों में अग्नि देवता निवास करते है, इनकी पूजा प्राणी हमेशा करते हैं।[37] दूसरे मंत्र में बताया गया है कि ऊपर मुख वाली अरणि तथा अधोमुख वाली अरणि से परम् प्रकाशमान इलापुत्र अग्निदेव उत्पन्न हुए।[38] ऋग्वेद में दूसरी जगह भी अग्नि को वृक्षों या पौधों का भ्रूण कहा गया है।[39] इन विवरण से अरणि के रूप में प्रयोग की गयी लकड़ियों को अग्नि का जनक कहा गया है। इस प्रकार कह सकते है कि अग्नि का प्रभाव होने के कारण समिधा और वृक्ष वैदिक काल में पवित्र एवं पूजनीय थे।

मंगल एवं अमंगल कारक वृक्ष–

वैदिक कालीन संस्कृति में वृक्ष मंगलकारी एवं अमंगलकारी माने जाते थे। वृक्ष के पके फल वाली शाखा को इन्द्र की मधुर वाणी के समान फलप्रद मानते थे।[40] षड्विंश ब्राह्मण में खून बहने वाला एक अमंगलसूचक वृक्ष का वर्णन मिलता है।[41] धार्मिक, आध्यात्मिक एवं पुण्यलाभ के लिए लोग वृक्षों की पूजा करते थे, साथ ही अमंगलकारी एवं अकल्याणकारी की आशंका से मुक्ति के लिए अमंगलसूचक वृक्षों की उपासना करते थे। वैदिक वाङ्मय में अश्वत्थ[42], उदुम्बर[43], करकन्धु[44], ककम्बिर[45], कर्समर्य[46], किंशकु[47], क्रमुक[48], खादिर[49], खर्जुर[50], तलस[51], तर्सतध[52], तिल्वक[53], दशवृक्ष[54], दारू [55], द्रुम[56], निर्यस[57], न्यग्रोध[58], पर्ण (पलाश)[59], पिप्पल[60], पितुदार[61], पिलू[62], पुतुद्रु[63], प्रक्ष[64], प्लक्ष[65], बद्र[66], विल्व[67], रज्जुदल[68], रोहितक[69], वाकल[70], वय[71], वरण[72], वल्क[73], वल्स[74], निकंकट[75], वृक्ष्य[76], समी या शमी[77], शाल्यली[78], शाखा[79], शिंशप[80], सिम्बल या शिम्बल[81], स्पन्दन[82], स्फुर्जक[83], स्यन्दन[84], स्रवल्य[85], स्रेकपर्ण[86], स्वाधिती[87] एवं हरिद्रु[88] लेकिन सभी वृक्ष की पूजा का स्रोत प्राप्त नहीं होता फिर भी वैदिक कालीन संस्कृति में वृक्षों से लाभ एवं उपयोगिता के कारण समाज में उन्हें यश प्राप्त थी। अथर्ववेद के अनेक मंत्रों में वृक्षों एवं लताओं के प्रति आराध्य व्यक्त हुआ है।[89] अथर्ववेद में एक स्थान पर पौधे का उल्लेख पृथ्वी देवी से जन्म लेती हुई एक देवी के रूप में हुआ है।[90] तैत्तरीय संहिता में संतान प्राप्त करने के मार्ग में किसी संकट को दूर करने के लिए पौधों को पशु–बलि समर्पित करने का वर्णन प्राप्त है।[91] वैदिक साहित्य में अलौकिक संतान उत्पत्ति एवं फसल उत्पादन में व्यक्त उत्पादन शक्ति माना गया है।[92] कुछ वृक्ष निश्चित रूप से पूजनीय के विषय थे। ऋग्वेद की ऋचाओं और उत्तरवर्ती वैदिक ग्रन्थ में प्राप्त संदर्भो से प्रमाणित होती है।

'अश्वत्थ', 'शमी', 'पलाश', 'विल्व', 'न्यग्रोध' एवं 'उदुम्बर' वृक्षों की महिमा–

ऋग्वेद में अश्वयुक्त दस रथ प्रदान करने के कारण पीपल के वृक्ष की ख्याति के लिए राजा पायु का वर्णन प्राप्त है।[93] ऋग्वेद में पीपल एवं पलाश के वृक्षों का महत्व जीवन रक्षक चिकित्सक के रूप में देखने को मिलता है।[94] अथर्ववेद में पीपल के वृक्ष को तृतीय देवलोक में स्थित बताया गया है एवं कहा गया है कि इसके अमृत से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है। ऋग्वेद में पीपल के वृक्ष को सृष्टि की संरचना का प्रतीक माना गया है।[95] विश्व को पीपल के वृक्ष से तुलना उपनिषदों में की गयी है।[96] सृष्टि की सृजन के पश्चात् प्रजापति ने कुछ संवेदनशील तत्व निर्मित करने का विचार मैत्रायणी संहिता में किया गया है।[97] प्रजापति घोड़ा बनकर अपने सिर को एक वर्ष तक जमीन पर लटकाये हुए रखा, जिसके पश्चात् उस घोड़े के मुख के अग्रभाग

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 6, Issue 5, May 2026

से एक वृक्ष प्रकट हुआ। घोड़े से प्रकट होने के कारण वह पीपल का वृक्ष कहलाया इसे यज्ञ कर्म भी कहते है। प्रजापति से उद्भव होने के कारण वृक्ष पवित्र माना जाने लगा। अश्व से पीपल का वृक्ष के प्रकट होने का विवरण उसमें प्राण–प्रतिष्ठा एवं जीवन व्याप्ति सूचक है। मैत्रायणी संहिता में उल्लेख है कि जब अग्नि उत्पन्न हुई तो उसकी अद्वितीय दिव्य ज्योति पीपल के वृक्ष में प्रवेश हो गयी।[98] अतः जो व्यक्ति पीपल का याज्ञिक ईंधन ले आता है। वह तेज ले आता है। इस विवरण से पता चलता है कि अग्नि देवता की पूजा का प्रयोजन वैदिक कालीन संस्कृति में पीपल के वृक्ष की पूजा होती थी एवं ऐसी आस्था प्रचलित था कि पीपल वृक्ष की उपासना से यश, कीर्ति एवं प्रसिद्धि प्राप्त होती है। वैदिक कालीन संस्कृति में शत्रुओं का विजय प्राप्त करने के लक्ष्य से पीपल के वृक्ष की उपासना की जाती थी।[99] अथर्ववेद से पता चलता है कि पुत्र की प्राप्ति के लिए लोग पीपल के वृक्ष की पूजा करते थे।[100] शतवारी और गुलर की मणियों का बांधना भी वीर पुत्र प्रदायी बताया गया है।[101] शतपथ ब्राह्मण में उल्लेखित उर्वशी एवं राजा पुरूरवा के अन्तर्गत पीपल एवं खेजड़ी वृक्षों की लकड़ियों से निर्मित अरणियों की अलौकिक महत्व का उल्लेख से पीपल एवं खेजड़ी वृक्षों की पूजा–परम्परा का वर्णन मिलता है।[102] शतपथ ब्राह्मण के अनुसार देवताओं को भोग के लिए पीपल के वृक्ष की लकड़ियों से विभिन्न प्रकार की थालियां बनायी जाती थी। स्वयं टूटी हुई पीपल के वृक्ष की शाखा से बनी थाली मित्र देवता के लिए एवं कुल्हाड़ी से काटी गयी पीपल के वृक्ष की शाखा से बनी थाली वरूण देवता के लिए उचित मानी गयी। यह विवरण पीपल के वृक्ष का मित्र तथा वरूण देवता से सम्बन्ध प्रकटीकरण करता है।[103] अनेक देवताओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए विभिन्न वृक्ष के बारे में गोमिल गृह्यसूत्र में वर्णित है कि पीपल के वृक्ष से सूर्य देवता पलाश के वृक्ष से यम देवता, न्यग्रोध वृक्ष से वरूण देवता एवं गूलर का वृक्ष प्रजापति देवता से सम्बन्धित है।[104] इसके आधार पर हम कह सकते है कि सूर्य के प्रतिनिधित्व स्वरूप पीपल की पूजा, यम के प्रतिनिधित्व के स्वरूप अंजीर के वृक्ष की पूजा, वरूण के प्रतिनिधित्व के स्वरूप बरगद के वृक्ष की पूजा तथा प्रजापति के प्रतिनिधित्व के रूप में गूलर के वृक्ष की पूजा प्रचलित थी। वैदिक काल में कर्षण का काम प्रारम्भ में गूलर के लकड़ी नुकीले सिरे वाला डंडा से सम्पन्न किया जाता था क्योंकि बेल और गूलर के वृक्ष को फलदायक की मान्यता प्राप्त थी।[105] गोभिल गृह्यसूत्र में एक स्थान पर ब्रह्मचारियों को पलाश बेल तथा पीपल का दण्ड धारण करने का विधान बताया गया है।[106] तथा कह सकते है कि ब्राह्मण ब्रम्हचारी को पलाश का, क्षत्रिय ब्रह्मचारी को बेल का तथा वैश्य ब्रह्मचारी को पीपल के वृक्ष का दण्ड धारण करना चाहिए। उस काल में ऐसा प्रचलित था कि पलाश, बेल एवं पीपल के वृक्ष की लकड़ी से बनी दण्ड धारण करने से इंन्द्रिया संयमित रहती है। बौधायन धर्मसूत्र में पाकड़ के वृक्ष को अधिक पवित्र बताया गया है एवं इससे लकड़ी से बने उपकरण बनाने का अनुरोध किया गया है।[107]

सोम पौधे की महत्ता–

ओल्डेनवर्ग[108] के अनुसार ऋग्वेद के संस्कारों में सोम–यज्ञ का प्रमुख स्थान होने के कारण स्वाभाविक रूप से सोम इस वेद के मुख्य देवताओं में से एक देवता है। ऋग्वेद के मण्डल 9 के समस्त 114 सूक्त एवं अन्य मण्डलों के 6 सूक्त सोम–देवता की अराधना में समर्पित हैं। इसके चार या पांच सूक्तांशों एवं 6 अन्य में इन्द्र, अग्नि, रूद्र देवता के साथ युगल रूप में भी सोम की स्तुति है। ऋग्वेद में सोम का नाम सरल एवं यौगिक रूप से सबसे अधिक बार आया है। आवृत्ति के आधार पर निर्णय करने पर वैदिक देवताओं में महत्व का दृष्टि से सोम देवता का तृतीय स्थान है। सोम देवता से सम्बन्धित विभिन्न सूक्त किसी स्थान पर वृक्ष की श्रद्धा में, कही चन्द्रमा के सम्मान में एवं कही सोम वृक्ष एवं चन्द्रमा दोनों की प्रतिष्ठा में समर्पित है। प्राकृतिक रूप से सोम एक पौधा है, जो पर्वतीय क्षेत्र में पाया जाता है। इसलिए इसे गिरिष्ठ कहा जाता है।[109] इसे पीसकर मादक द्रव्य प्राप्त किया जाता था, जिससे स्फूर्ति एवं अपूर्व शक्ति प्राप्ति होती थी एवं इसके पान से अजरता की प्राप्ति होती थी तथा अद्भुत

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

आनन्द की अनुभूति होती थी। यही कारण है कि वैदिक कालीन संस्कृति में सोम की विशेष सम्मान एवं महत्व प्राप्त था। देवताओं के अनेक गुणों का आरोपण सोम के पौधे पर किया गया है जो इस आशय का साधन प्रस्तुत करता है कि सोम के पौधे को वैदिक काल में देवता जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त थी यथा–

1. देवता अमर होते हैं, ऋग्वेद[110] के अनुसार सोम भी अमर है।
2. देवता मनुष्यों एवं सभी प्राणियों की रोगग्रस्तता एवं अन्य शारीरिक बीमारी दूर करते हैं, ऋग्वेद[111] में कहा गया है कि सोमदेव सभी प्रकार की बीमारी का निवारण करते हैं, अन्धों को दृष्टि और लंगड़ों को चलाने की शक्ति प्रदान करते हैं।
3. देवता प्राणियों को चिरायु बना सकते हैं, सोम के लिए ऋग्वेद[112] में उल्लेख है कि वह इस लोक में दीर्घजीवन प्रदान करता है।
4. देवता प्राणियों के रक्षक एवं कल्याणकर्ता माने जाते हैं। ऋग्वेद में सोम से पूजा की जाती है कि ''हे सोम! तुम कर्मशीलों के द्रष्टा हो, तुम शरीर में रमकर कष्टों का हरण करते हुए हमारा कल्याण करो।''[113]
5. देवता राक्षसों के विनाशक कहे गये हैं, ऋग्वेद[114] में सोम को भी राक्षसों को भगाने वाला कहा गया है।[115]

ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि सोम के गुणों में पराक्रमी, शत्रुओं को मारने वाला, देवगण का पोषक है।[116] ऋग्वेद के अनुसार पितरों के संयोग से सोम आकाश धरती का विस्तार करता है।[117] शतपथ ब्राह्मण में प्रत्यक्ष रूप से सोम को पितृमान कहा गया है।[118] वाजसनेयी संहिता में उल्लेख है कि सोम ब्राह्मणों का राजा है।[119] ऋग्वेद में एक स्थान पर बताया गया है कि सोम बर्तन में वैसा ही दिखायी पड़ता है जैसा कि जल में चन्द्रमा।[120] अथर्ववेद के अनुसार सोम का अर्थ चन्द्रमा है।[121] ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि चन्द्रमा ही देवों का सोम है।[122] शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि देवताओं का भोजन चन्द्रमा ही है।[123] कौषीतकी ब्राह्मण में सोम के पौधे या इसके रस को चन्द्रदेव का प्रतीक कहा गया है।[124] लेकिन वैदिक संस्कृति में अधिक स्थान पर सोम से तन्नामधारी वृक्ष का दीप्ति करते हैं, फिर भी इनके रचना काल में सोम एवं चन्द्रमा के एकीकरण की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो चुकी थी।[125] ऐसा माना जाता है कि वैदिक कालीन संस्कृति में सोम के पौधे की अधिक लोकप्रियता एवं उनके प्रति लोक–श्रद्धा के कारण चन्द्रमा के साथ उसका एकीकरण स्थापित किया गया। ऋग्वेद के मंत्रों[126] में सोम को 'इन्दु' कहा जाना एवं ऋग्वेद में ही चन्द्रमा के लिए 'इन्दु' शब्द का प्रयोग किया जाना उक्त तथ्य का परिचायक है। सोम पौधे का विश्वव्यापी रूप के विषय में वर्तमान तक जिज्ञासा बनी हुई है। ऋग्वेद में जहां इसे सिन्धु–सम्भूत कहा गया है।[127] वही गिरिष्ठ[128] कहकर इसे पर्वत पर उगने वाला श्रेष्ठ लता भी कहा गया है।[129] एवं यह भी उल्लेख मिलता है कि यह आर्यावर्त देश में सुवान नदी पर पाया जाता था।[130] ऋग्वेद में वर्णित है कि गरूण पक्षी इसे स्वर्ग से यहां पर ले आया था।[131] इस तरह से दुबारा उल्लेख मिलता है कि पर्वत के ऊपर से कोई बाज ले आया था।[132] ऋग्वेद में एक स्थान पर इसे वनस्पति की संज्ञा दी गयी है।[133] यह कौन सी वनस्पति थी? डॉ0 वी0डी0 उपाध्याय ने इसे पौराणिक पौधा माना है, जिसकी पहचान संभवन नहीं है।[134] इस पर विचार करते हुए प्रो0 ए0एल0 बाशम ने यह मत प्रकट किया है कि सोम में संदेह का प्रभाव एवं असाधारण सीमा तक उस प्रभाव के प्रसार का भाव इस प्रकार का है जो उत्तेजक औषधियों से सम्बन्धित है। सम्भव है सोम भांग को कहा गया है। जो भारत के अनेक भागों में, मध्य एशिया में एवं लोग भांग नामक मादक पदार्थ बनाते है।[135] डॉ0 भगवान सिंह इसे ईख मानते है। ऋग्वेद के एक मंत्र में पाषाण द्वारा पीसे जाने पर सोम के आविर्भाव की चर्चा की गयी है। इस मंत्र में वाग्देवी द्वारा घोषणा की गयी है कि पत्थर द्वारा पीसकर जो सोम प्रकट होते है, मैं उन्हें धारण करने वाली हूं। त्वष्टा, पूषा एवं भंग मेरे द्वारा ही धृत है। जो अनुष्ठान, यजमान, सोमरस निष्पन्न करके देवताओं को तृप्त करता हैं, उसे मैं धन प्रदान करती हूं।[136]

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 6, Issue 5, May 2026

कुश–पौधो की महिमा–

कुश को एक महान औषधि बताया गया है जिसकी जानकारी वेदों से मिलती है। इसे रोगाणु से रक्षा करने वाला और उनको नष्ट करने वाला कहा है।[137] अथर्ववेद में कुश को दीर्घजीवी कहा गया है।[138] अथर्ववेद में कुश को मृतप्राय कहा गया है[139] एवं भयभीत पुरूषों को पल्लवित अखण्ड कुशाधारी बांधी जाती है, यमदूत उसके बालों को नहीं उखाड़ते एवं न तो उनके हृदय पर घूसा मारते हैं। अथर्ववेद में एक स्थान पर कुश की शुद्धता एवं निर्मलता जैसे गुणों का धारण करते हुए पाप से मुक्ति के लिए कुश के पौधे से इस तरह से प्रार्थना की गयी है– 'हे मणिरूप धर्म! तू अहिंसित यज्ञ की वेदी पर बैठने वाला आकर्षक और संशोधक है। तुझे ऋषि अपनी शुद्धता के लिए आश्रित करते है। अतः हमें पापों से छुड़ाओं।[140] अथर्ववेद में एक अन्य स्थान पर कुशलता एवं वृद्धा अवस्था की अप्राप्ति के लिए कुश बांधने का वर्णन प्राप्त है।[141] इन सभी उपर्युक्त जानकारी से पता चलता है कुश में एक ऐसी दैवी शक्ति है, जिसके स्पर्श एवं कर्मकाण्डों में प्रयोग करने से साधक में पवित्र भावनाओं का संचार होता है। यजमान के ललाट पर कुशा का प्रयोग[142], वृक्ष की छाल पर कुशा का प्रयोग[143], अथवा यज्ञ–पशु के वध के पहले उस पशु की नाभि पर कुशा का प्रयोग अथवा शिशु का प्रथम संस्कार के समय उसके बाल में कुशा का प्रयोग[144], दुष्टों, राक्षसों को भगाने के लिए किया जाता था। इसका प्रयोग यज्ञमान, बालक या यज्ञ–पशु, यूप के वृक्ष की रक्षा के लिए किया जाता था।[145] यहां दुष्ट राक्षस शब्द द्वेष का सूचक है एवं यही कारण है कि कुश के माध्यम से निन्दनीय विचारों से मुक्ति की कामना की गयी है। इसलिए वैदिक कालीन संस्कृति में ऋषि, तपश्वी, साधक इन सभी लोगों ने अन्यायपूर्ण शासन का प्रयोग करते चले आ रहे हैं, जिससे उनका मतिभ्रम न हो, एकाग्रता बनी रहे एवं विचार पवित्र बनी रहें। वर्तमान समय में भी बिना कुश के कोई धार्मिक यज्ञ, कर्मकाण्ड, पूजा सम्पन्न नहीं किया जाता हैं ब्राह्मण ग्रन्थों में कुश एवं दूर्वा के महत्व को स्वीकृत किया गया है। शतपथ ब्राह्मण में सोम के स्थान पर कई अन्य पौधों के नाम देखने को मिलते हैं, जिनमें दूब, फाल्गुन एवं हरे कुश का पौधा प्रसिद्ध है।[146] वैदिक कालीन संस्कृत में आर्यों के खेती करने के प्रति लगाव के कारण वृक्ष की पूजा के प्रचलन को बल मिला। उपनिषदों में मुख्य वाच्य विषय ब्रह्मा, जीव, जगत आदि के स्वरूप का वर्णन है एवं उनमें वनस्पतियों एवं उनके उत्पादों के लिए न केवल श्रद्धा व्यक्त की गयी है बल्कि इधर–उधर इनकी उपमा ब्रह्मा से देकर उनकी महत्ता प्रतिपादित की गयी हैं। तैत्तरीय उपनिषद में कहा गया है कि अन्न ही ब्रह्म है। इसी अन्न से सभी प्राणी उत्पन्न होते हैं अन्न के उत्पन्न होने से ही जीवन चलता है एवं ये नष्ट होकर अन्न में मिल जाते है एवं उनमें एकरूपता प्राप्त करते हैं। आर्यों ने खेती करने में अन्नमूलक पर महत्व दिया है। अन्न वनस्पतियों से सम्बद्ध है एवं खाद्यान्न का उत्पादन पेड़–पौधों से ही होता था। अतः कहा जा सकता है कि अन्न के प्रति श्रद्धा सम्पूर्ण वनस्पति जगत के प्रति मानवीय श्रद्धा को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुई होगी एवं इस श्रद्धा ने जनमानस को उपासना की दिशा में प्रेरित किया होगा।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद– 7/34/23
2. ऋग्वेद– 10/64/8
3. ऋग्वेद– वाजसनेयी संहिता 18/14
4. ऋग्वेद– 10/146/6
5. ऋग्वेद– 10/140/1–2
6. ऋग्वेद– 10/97/3

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

7. ऋग्वेद– 10/97/5
8. अथर्ववेद– 6/36
9. यजुर्वेद, अध्याय 11, मंत्र 18
10. वाजसनेयी संहिता, 1/60
11. यजुर्वेद, अ0 16, मं0 19
12. ऋग्वेद– 10/31/7
13. ऋग्वेद– 10/81/4
14. तैत्तरीय ब्राह्मण 11/8/9/6
15. शपतथ ब्राह्मण– सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट, खंड–12, पृ0 323
16. ऋग्वेद– 01/164/20
17. मुण्डकोपनिषद 3/1/1
18. श्वेताम्बर उपनिषद् 4/6/22, 5/54/12
19. प्राचीन मिस्र की स्थापत्य में भी वृक्षों को 'विश्व–रूप' में प्रस्तुत किया गया है। श्वेताम्बर उपनिषद् 3/9 में वृक्ष को 'विश्व–पुरूष' का उपमान दिया गया है तथा कठोपनिषद् 6/1 में संसार की अश्वत्थ वृक्ष की तुलना की गयी है।
20. ऋग्वेद– 1/164/22
21. ऋग्वेद– 10/114/4
22. ऋग्वेद– 1/35/7
23. शास्त्री, के0एन0, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, खंड–1, पृ0 103
24. पूर्वोक्त ऋ0 1/164/22
25. ऋग्वेद– 10/135/1
26. ऋग्वेद– 10/135/1
27. अथर्ववेद– 6/95/1
28. ऋग्वेद– 10/97/05
29. कौषीतकी उपनिषद 1/3
30. ऋग्वेद– 2/39/1
31. अथर्ववेद– 4/37/4
32. तैत्तरीय संहिता– 3/4/8/4
33. अथर्ववेद– 14/2/9
34. सुवथकर–घाटे 'ए लेक्चर्स आन द ऋग्वेद', पृ0 132
35. ऋग्वेद– 3/23/2
36. ऋग्वेद– 3/29/1
37. ऋग्वेद– 3/29/2
38. ऋग्वेद– 3/29/3

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Volume 6, Issue 5, May 2026

Impact Factor: 5.731

39. ऋग्वेद– 2/1/1
40. ऋग्वेद– 1/8/8
41. वेबर इंडिशे स्टूडियन 1.40 और जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएन्टल सोसाइटी 15.214
42. ऋ0 6/47/24, 10/97/5
43. अथर्ववेद– 19/31/1
44. ऋग्वेद– 1/12/6
45. ऋग्वेद– 6/48/17
46. तैत्तरीय संहिता 5/2, 7/34, 6/2, 1/5
47. ऋग्वेद– 10/85/20
48. तैत्तरीय संहिता 5/1, 9/3
49. ऋग्वेद– 3/53/19
50. तैत्तरीय संहिता– 2/4, 9/2
51. अथर्ववेद– 6/15/3
52. अथर्ववेद– 5/29/15
53. शपतथ ब्राह्मण– 13/8/1/16
54. अथर्ववेद– 2/9/1
55. अथर्ववेद– 10/4/3
56. वृक्षों के लिए द्रुम शब्द का प्रयोग ब्राह्मण काल से प्रारम्भ हुआ। षड्विंश ब्राह्मण 5/11 तथा निखत 4/19, 5/26, 9/23 आदि में इसका उल्लेख है।
57. तैत्तरीय संहिता– 2/1, 5/4
58. ऋग्वेद– 1/24/7
59. कौषीतकी ब्राह्मण 10/2
60. ऋग्वेद– 1/164/20
61. शतपथ ब्राह्मण 3/5/2/15, 13/4/4/5–17
62. अथर्ववेद– 20/135/12
63. अथर्ववेद– 8/2/28
64. तैत्तरीय संहिता– 6/3, 10/2
65. अथर्ववेद 5/5/5, तैत्तरीय संहिता 3/4/8/4
66. मैत्रायणी संहिता 3/11/2
67. अथर्ववेद– 20/136/13
68. शतपथ ब्राह्मण– 13/4/4/6
69. मैत्रायणी संहिता– 3/9/3
70. तैत्तरीय ब्राह्मण 3/7/4/2

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

71. ऋग्वेद– 2/4/4
72. अथर्ववेद– 6/85/1
73. तैत्तरीय संहिता– 1/4/7/6
74. तैत्तरीय संहिता– 8/3/9/1
75. तैत्तरीय संहिता– 3/5/7/3
76. शपतथ ब्राह्मण– 1/1/1/10
77. अथर्ववेद– 6/11/1, 30/2/3
78. ऋग्वेद– 7/50/3
79. ऋग्वेद– 1/8/8
80. ऋग्वेद– 3/53/19
81. ऋग्वेद– 3/53/22
82. ऋग्वेद– 3/53/19
83. शपतथ ब्राह्मण– 13/8/1/16
84. कौशिक सूत्र– 8/15
85. अथर्ववेद– 8/5/4
86. तैत्तरीय ब्राह्मण– 3/6/6/3
87. ऋग्वेद– 5/32/10, 9/96/6
88. शतपथ ब्राह्मण– 13/8/1/16
89. अथर्ववेद– 1/34/1
90. अथर्ववेद– 6/36/1
91. तैत्तरीय संहिता– 2/1/5/3
92. मिश्र, सच्चिदानन्द, प्राचीन भारत में ग्राम एवं ग्राम्य जीवन, पृ0 190
93. ऋग्वेद– 6/47/24
94. ऋग्वेद– 10/97/5
95. अथर्ववेद– 6/95/1
96. प्रकाश, बुद्ध, ऋग्वेद एण्ड इण्डस वैली सिविलाइजेशन, पृ0 149
97. कठोपनिषद 6/1, मैत्रायणी उपनिषद 6/4
98. मैत्रायणी– 1/6/8
99. अथर्ववेद– 3/6/1
100. अथर्ववेद– 6/11/1
101. अथर्ववेद– 19/31 एवं 19/36
102. शतपथ ब्राह्मण, बुक्स छः 16/1/1
103. शपतथ ब्राह्मण बुक्स छः 16/1/1

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

104. गोभिल गृह्यसूत्र– 4/7/22
105. ऋग्वेद– 5/22/10
106. गोभिल गृह्यसूत्र– 2/10/10
107. बौधायन धर्मसूत्र– 11/3/25
108. जीट्सक्रिफ्ट दर ड्यूट्स्चेन मारगेन्लैन्डिस्चेन गेसल्सचाफ्ट, पृ0 42, 241
109. ऋग्वेद– 5/43/4
110. ऋग्वेद– 1/43/9
111. ऋग्वेद– 10/25/11
112. ऋग्वेद– 9/4/6
113. ऋग्वेद– 8/48/9
114. ऋग्वेद– 9/49/5
115. ऋग्वेद– 9/49/6
116. ऋग्वेद– 9/28/6
117. ऋग्वेद– 8/48/13
118. शतपथ ब्राह्मण– 2/6/1/4
119. वाजसनेयी संहिता– 9/40
120. ऋग्वेद– 8/28/8
121. अथर्ववेद– 7/81/3–4, 11/6/7
122. ऐतरेय ब्राह्मण– 7/11
123. शतपथ ब्राह्मण– 1/6/4/5
124. कौषीतकी ब्राह्मण– 7/10/44
125. मैकडानल, वैदिक माइथालोजी, पृ0 112
126. ऋग्वेद– 9/86/24
127. ऋग्वेद– 1/129/6
128. ऋग्वेद– 9/61/7
129. ऋग्वेद– 5/43/4
130. ऋग्वेद– 10/34/1
131. काणे, पी0वी0 धर्मशास्त्र का इतिहास, खण्ड प्रथम, पृ0 555
132. ऋग्वेद– 9/86/24
133. ऋग्वेद– 1/93/6
134. ऋग्वेद– 9/12/7
135. उपाध्याय, वी0डी0 वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ0 433–34
136. बाशम, ए0एल0, अद्भुत भारत, पृ0 201

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Volume 6, Issue 5, May 2026

Impact Factor: 5.731

137. ऋग्वेद– 10/125/2
138. अथर्ववेद– 19/32/1
139. अथर्ववेद– 19/32/2
140. अथर्ववेद– 19/33/3
141. अथर्ववेद– 19/33/4
142. वाजसनेयी संहिता– 3/62
143. वाजसनेयी संहिता– 5/42, 6/15
144. शांखायन गृह्यसूत्र 1/28/7 तथा वाजसनेयी संहिता 6/15
145. शतपथ ब्राह्मण– 4/5/20
146. तैत्तरीय ब्राह्मण– 3/3